



अजन्ता दर्पण

त्रैमासिक ई - सूचना पत्र (मार्च - 2026)



संरक्षक

श्री प्रदीप कामले
मंडल रेल प्रबंधक/नांदेड़



मार्गदर्शक

श्री सी एच कल्याण राजू
अपर मंडल रेल प्रबंधक/नांदेड़



संपादक

श्री रणजीत कुमार
प्रभारी राजभाषा अधिकारी/नांदेड़



सहयोग

श्री मुकेश साव
कनिष्ठ अनुवादक/नांदेड़



राजभाषा अनुभाग, नांदेड़ मंडल , दक्षिण मध्य रेलवे

77वें गणतंत्र दिवस का आयोजन

दिनांक 26.01.2026 को 77वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर मंडल कार्यालय में गणतंत्र दिवस समारोह आयोजित किया गया. समारोह की अध्यक्षता श्री प्रदीप कामले, मंडल रेल प्रबंधक/नांदेड़ ने की. उन्होंने



ध्वजारोहण कर गणतंत्र दिवस संदेश का पठन किया. समारोह में रेल सुरक्षा बल की टुकड़ी ने मंडल रेल प्रबंधक/नांदेड़ को परेड़ की सलामी दी. इस अवसर पर श्री राजेन्द्र कुमार मीणा, अपर मंडल रेल प्रबंधक ने महाप्रबंधक दक्षिण

मध्य रेलवे के गणतंत्र दिवस संदेश का पठन किया. इस समारोह में श्री अपर मंडल रेल प्रबंधक/नांदेड़ और मंडल के वरिष्ठ अधिकारीगण, अन्य अधिकारीगण तथा कर्मचारीगण और उनके परिजन काफी संख्या में उपस्थित थे. इस कार्यक्रम में केन्द्रीय विद्यालय के छात्र - छात्राओं ने रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया साथ ही स्काउट & गाइड द्वारा मल्लखंब के माध्यम से अलग - अलग झाँकियों का प्रदर्शन किया गया.



छत्रपति शिवाजी महाराज की जयंती

दिनांक 19 फरवरी 2026 को मंडल कार्यालय के कॉन्फ्रेंस हॉल में मंडल रेल प्रबंधक/नांदेड़ (DRM) महोदय की अध्यक्षता में छत्रपति शिवाजी महाराज की जयंती श्रद्धा एवं सम्मान के साथ मनाई गई. कार्यक्रम का शुभारंभ शिवाजी महाराज का स्मरण करते हुए दीप प्रज्ज्वलित कर एवं शिवाजी महाराज के चित्र पर माल्यार्पण एवं पुष्पहार अर्पित कर किया गया. इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक/नांदेड़ महोदय ने अपने उद्बोधन में शिवाजी महाराज के अद्वितीय नेतृत्व, साहस, संगठन क्षमता तथा सुशासन की नीति पर प्रकाश

डालते हुए कहा कि उनका जीवन राष्ट्रभक्ति, कर्तव्यनिष्ठा और स्वाभिमान का प्रेरक उदाहरण है. कार्यक्रम के दौरान उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उनके जीवन, आदर्शों राष्ट्र सेवा एवं कर्तव्यपरायणता की भावना को आत्मसात करने का संकल्प लिया.

अंत में श्री प्रदीप कामले, मंडल रेल प्रबंधक/नांदेड़ महोदय ने सभी कर्मचारियों से आह्वान किया कि वे शिवाजी महाराज के आदर्शों को अपने कार्य एवं आचरण में अपनाते हुए अपने निजी जीवन में आत्मसात करें.



अंतराष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन

दिनांक 08.03.2026 को मंडल कार्यालय के सभागृह में अंतराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में एक गरिमामय कार्यक्रम का आयोजन किया गया. इस कार्यक्रम में मंडल रेल प्रबंधक महोदय मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे. कार्यक्रम का उद्देश्य कार्यस्थल पर महिलाओं की भूमिका, उनकी उपलब्धियों तथा उनके सशक्तिकरण के महत्व को रेखांकित करना था. इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक महोदय ने अपने संबोधन में

महिला कर्मचारियों के योगदान की सराहना करते हुए कहा कि भारतीय रेलवे के विकास में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है और आज महिलाएं विभिन्न विभागों में उत्कृष्ट कार्य कर रही हैं. उन्होंने महिलाओं को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि उनके परिश्रम, समर्पण और दक्षता से संगठन निरंतर प्रगति कर रहा है. इस अवसर पर मंडल के अधिकारीगण, कर्मचारी तथा बड़ी संख्या में महिला कर्मचारी उपस्थित होकर कार्यक्रम को सफल बनाएं.



सुविचार

संघर्ष में आदमी अकेला होता है,
सफलता में दुनिया उसके साथ होती है।

जब-जब जग किसी पर हँसा है
तब-तब उसी ने इतिहास रचा है॥

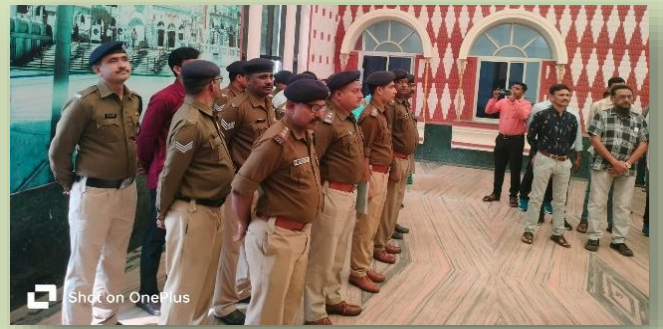
सुविचार

वक्त की लहरों से टकराते हुए आगे बढ़ जाइए।
फेर कर मुंह जिंदगी का सामना
नहीं किया जाता ॥

महात्मा गांधी की पुण्यतिथि पर शहीद दिवस का आयोजन

दिनांक 30.01.2026 को मंडल कार्यालय/नांदेड में महात्मा गांधी की पुण्यतिथि पर शहीद दिवस के उपलक्ष्य में श्रद्धापूर्वक कार्यक्रम का आयोजन किया गया. कार्यक्रम के दौरान उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने दो मिनट का मौन रखकर शहीदों की स्मृति को नमन किया. इस अवसर पर यह संदेश दिया गया कि देशभक्ति,

कर्तव्यनिष्ठा एवं राष्ट्रहित सर्वोपरि रखने की भावना हम सभी के जीवन एवं कार्यशैली का अभिन्न अंग होनी चाहिए. कार्यक्रम के माध्यम से उपस्थित कर्मचारियों में राष्ट्रप्रेम, समर्पण एवं उत्तरदायित्व की भावना को और अधिक सुदृढ़ किया गया. शहीद दिवस का यह आयोजन प्रेरणादायी एवं गरिमामय वातावरण में संपन्न हुआ.



वेतन निर्धारण से संबंधित सेमिनार का आयोजन

दिनांक 21.02.2026 को मंडल कार्यालय के कॉन्फ्रेंस हॉल में कार्मिक विभाग के बिल सेक्शन के कर्मचारियों के लिए पे फिक्सेशन से संबंधित एक सेमिनार का आयोजन किया गया. इस सेमिनार का उद्देश्य कर्मचारियों को वेतन निर्धारण (Pay Fixation) से संबंधित नियमों, प्रक्रियाओं तथा नवीन प्रावधानों की जानकारी प्रदान करना था. कार्यक्रम के दौरान सहायक कार्मिक अधिकारी

द्वारा सातवें वेतन आयोग के अंतर्गत वेतन निर्धारण, पदोन्नति के बाद वेतन निर्धारण, वेतन पुनर्निर्धारण तथा उससे संबंधित विभिन्न नियमों और दिशानिर्देशों के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई. साथ ही कर्मचारियों की शंकाओं का समाधान भी किया गया और उन्हें व्यावहारिक उदाहरणों के माध्यम से विषय को समझाया गया.



कर्मचारियों के लिए एचआरएमएस एवं उम्मीद कैंप का आयोजन

दिनांक 28.01.2026 को पूर्ण और 29.01.2026 को आदिलाबाद स्टेशन में कर्मचारियों के लिए एचआरएमएस (HRMS) एवं उम्मीद कैंप का आयोजन किया गया. इस शिविर का उद्देश्य कर्मचारियों को उनकी सेवा संबंधी समस्याओं के समाधान तथा विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी प्रदान करना था. कैंप के दौरान कर्मचारियों की सेवा पुस्तिका, वेतन, पेंशन, अवकाश, चिकित्सा सुविधाओं तथा अन्य प्रशासनिक विषयों से संबंधित समस्याओं को सुना गया तथा उनके त्वरित समाधान के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए. साथ ही उम्मीद कैंप के माध्यम से कर्मचारियों को स्वास्थ्य, कल्याणकारी योजनाओं एवं सुविधाओं के बारे में जानकारी प्रदान की गई.

इस अवसर पर संबंधित विभागों के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे तथा उन्होंने कर्मचारियों की समस्याओं का समाधान करने में सहयोग किया. कर्मचारियों ने भी इस प्रकार के कैंप के आयोजन की सराहना की और इसे अत्यंत उपयोगी बताया.



मंडल चिकित्सालय/नांदेड़ में हिंदी लाइब्रेरी कॉर्नर की शुरुआत

मंडल चिकित्सालय, नांदेड़ में उपचार हेतु आने वाले मरीजों के खाली समय को उपयोगी एवं सार्थक बनाने के उद्देश्य से नांदेड़ हिंदी पुस्तकालय के पुस्तकपाल श्री नवल कुमार, मुख्य स्वास्थ्य निरीक्षक/नांदेड़ द्वारा हिंदी लाइब्रेरी कॉर्नर की शुरुआत की गई. इस पहल का उद्देश्य मरीजों एवं उनके परिजनों को प्रतीक्षा के दौरान हिंदी की पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं तथा अन्य रोचक साहित्य

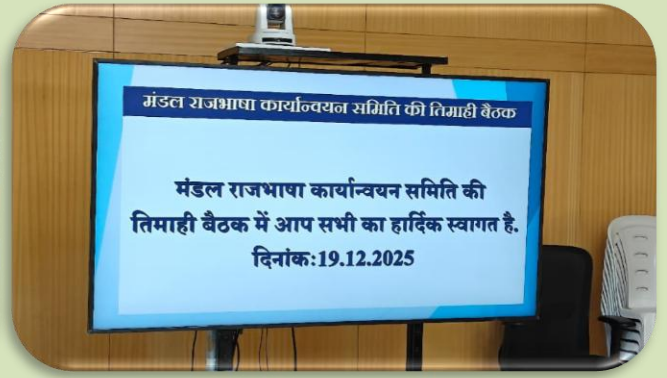
के अध्ययन की सुविधा उपलब्ध कराना है. हिंदी लाइब्रेरी कॉर्नर में विभिन्न प्रकार की हिंदी पुस्तकों एवं पत्र-पत्रिकाओं को रखा गया है, जिससे मरीजों का समय सकारात्मक रूप से व्यतीत हो सके. मंडल चिकित्सालय में स्थापित यह हिंदी लाइब्रेरी कॉर्नर मरीजों के लिए एक उपयोगी एवं सराहनीय पहल सिद्ध हो रहा है.



राजभाषा अनुभाग/नांदेड द्वारा किए गए विशेष कार्य

मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक का आयोजन

दिनांक 19.12.2026 को मंडल रेल प्रबंधक की अध्यक्षता में मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक का आयोजन राजभाषा विभाग, नांदेड मंडल द्वारा मंडल रेल प्रबंधक सभागृह में किया गया. बैठक की अध्यक्षता मंडल रेल प्रबंधक श्री प्रदीप कामले ने की. बैठक का उद्देश्य नांदेड मंडल में राजभाषा हिंदी के प्रगतिशील प्रयोग, कार्यान्वयन की समीक्षा तथा राजभाषा अधिनियम एवं नियमों के प्रभावी अनुपालन को सुनिश्चित करना रहा. इस बैठक के दौरान विभिन्न विभागों द्वारा राजभाषा हिंदी में किए गए कार्यों की समीक्षा की गई तथा हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग को प्रोत्साहित करने हेतु आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए.



परतूर स्टेशन पर विभिन्न यूनिटों का निरीक्षण

दिनांक 20.01.2026 को परतूर स्टेशन पर स्थित विभिन्न यूनिटों एवं कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन के संबंध में निरीक्षण किया गया. इस दौरान कार्यालयों में राजभाषा नीति के अंतर्गत निर्धारित मदों के अनुपालन की स्थिति का जायजा लिया गया. निरीक्षण के दौरान पत्राचार, टिप्पण एवं मसौदा, अभिलेखों, नामबोर्ड, सूचना बोर्ड

तथा कंप्यूटर पर हिंदी के प्रयोग की स्थिति की समीक्षा की गई. साथ ही कर्मचारियों को कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग के लिए प्रेरित किया गया तथा राजभाषा अधिनियम एवं नियमों के प्रावधानों के पालन के संबंध में आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए.



निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल॥
भारतेंदु हरिश्चंद्र



मालटेकड़ी और भोकर स्टेशन पर विभिन्न यूनिटों का निरीक्षण

दिनांक 28.01.2025 को मालटेकड़ी और भोकर स्टेशन पर स्थित विभिन्न यूनिटों/कार्यालयों में राजभाषा कार्यन्वयन मर्दों

का जायजा लिया गया तथा कर्मचारियों को हिंदी में काम करने के लिए प्रोत्साहन तथा मार्गदर्शन दिया गया.



आदिलाबाद स्टेशन पर हिंदी कार्यशाला का आयोजन

दिनांक 29.01.2026 को आदिलाबाद स्टेशन पर हिंदी कार्यशाला / राजभाषा कार्यन्वयन समिति की तिमाही बैठक का आयोजन किया गया. जिसमें विभिन्न विभागों के कुल 38 कर्मचारियों ने भाग लिया. इस अवसर पर श्री रणजीत कुमार, प्रभारी राजभाषा अधिकारी/नांदेड़ उनके साथ श्री कृष्ण बिहारी पाण्डे कनिष्ठ अनुवादक/नांदेड़ ने

कर्मचारियों को राजभाषा नियमों/अधिनियमों तथा प्रोत्साहन योजनाओं के बारे में अवगत कराया एवं उपस्थित सभी कर्मचारियों को राजभाषा में अधिक से अधिक कार्य करने के लिए प्रोत्साहन किया. इस अवसर पर विभिन्न यूनिटों में राजभाषा कार्यन्वयन मर्दों का निरीक्षण किया गया.

पूर्ण स्टेशन के प्रशिक्षण केंद्र में विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन

दिनांक 25.02.2026 को पूर्ण स्टेशन के प्रशिक्षण केंद्र में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य कर्मचारियों में हिंदी के प्रति रुचि, सृजनात्मकता एवं भाषाई दक्षता को प्रोत्साहित करना रहा। इस अवसर पर निबंध लेखन, हिंदी टिप्पणी एवं प्रारूप लेखन, श्रुतलेख (डिक्टेशन) जैसी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें कर्मचारियों ने

उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस प्रतियोगिता में भाग लिये प्रतिभागियों को प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वालों को सम्मान राशि व प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया जाएगा, जिससे कर्मचारियों में उत्साह एवं सकारात्मक प्रतिस्पर्धा की भावना का संचार होगा। यह आयोजन पूर्ण स्टेशन पर राजभाषा हिंदी के सुदृढ़ कार्यान्वयन की दिशा में एक सराहनीय एवं प्रेरणादायी पहल सिद्ध हुआ।



किनवट और मुदखेड स्टेशन पर विभिन्न यूनिटों/कार्यालयों का निरीक्षण

दिनांक 30.01.2026 को किनवट एवं मुदखेड स्टेशन पर स्थित विभिन्न यूनिटों/कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन के संबंध में निरीक्षण किया गया। इस दौरान राजभाषा नीति के अंतर्गत निर्धारित विभिन्न मदों के अनुपालन की स्थिति का अवलोकन किया गया। निरीक्षण के दौरान कार्यालयों में हिंदी में पत्राचार, टिप्पण एवं नाम

बोर्ड पर हिंदी के प्रयोग तथा कंप्यूटर पर हिंदी के उपयोग की स्थिति की समीक्षा की गई। साथ ही संबंधित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को दैनिक कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग के लिए प्रेरित किया गया तथा राजभाषा अधिनियम एवं नियमों के प्रावधानों के पालन के संबंध में आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए।



मनुष्य के रूप में हमारी सबसे बड़ी क्षमता दुनिया को बदलना नहीं है, बल्कि खुद को बदलना है।

महात्मा गांधी

हिंदी कुंजीयन प्रशिक्षण

माह के दौरान मंडल कार्यालय के विभिन्न विभागों में कार्यरत कर्मचारियों से संपर्क किया गया उन्हें हिंदी में काम करने के लिए प्रोत्साहन एवं मार्गदर्शन दिया गया तथा इस अवसर पर विभागों में स्थित कंप्यूटरों में हिंदी यूनिकोड एक्टिवेट कर कर्मचारियों को हिंदी कुंजीयन का प्रशिक्षण दिया गया.



विभिन्न विभागों के अलग-अलग कर्मचारियों को कुंजीयन प्रशिक्षण का दृश्य

राजभाषा नियम 1976

राजभाषा नियम 1976 के अनुसार हिंदी में प्रवीणता का अर्थ - यदि किसी कर्मचारी ने मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर कोई परीक्षा हिन्दी के माध्यम से उत्तीर्ण कर ली है; या स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक परीक्षा की समतुल्य या उससे उच्चतर किसी अन्य परीक्षा में हिन्दी को एक वैकल्पिक विषय के रूप में लिया हो; या

यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्रारूप में यह घोषणा करता है कि उसे हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त है; तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त कर ली है .

राजभाषा नियम 1976 के अनुसार हिंदी में कार्यसाधक प्राप्त का अर्थ

यदि किसी कर्मचारी ने-

मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर परीक्षा हिन्दी विषय के साथ उत्तीर्ण कर ली है; या केन्द्रीय सरकार की हिन्दी परीक्षा योजना के अन्तर्गत आयोजित प्राज्ञ परीक्षा या यदि उस सरकार द्वारा किसी विशिष्ट प्रवर्ग के पदों के सम्बन्ध में उस योजना के अन्तर्गत कोई निम्नतर परीक्षा विनिर्दिष्ट है, वह परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है.

**नांदेड़ मंडल के अंतर्गत अलग-अलग स्टेशनों से विभिन्न कर्मचारियों द्वारा लिखी गई
कविता, कहानी और रचनाएं**

रेलवे की कार्यप्रणाली : राष्ट्र की धड़कन

रेलवे की धड़कन पटरी पर चलती है,
लोकोमोटिव की साँसें कोयला-बिजली से जलती हैं।
इंजन आगे-आगे, डिब्बे पीछे-पीछे चलते,
यात्री, माल और सपने—सबको साथ लेकर बढ़ते।

सिग्नल की आँखें तीन रंगों में बोलती हैं,
लाल रुकने को, हरा चलने को कहती हैं।
पॉइंट बदलते, लाइन बदलती हर मोड़ पर,
स्टेशन मास्टर की मुहर से सफर होता है जोड़ पर।

ट्रैक मेंटेनर जाँचते, पटरियाँ सीधी रखते,
ओवरहेड तारों से बिजली, ट्रेन को बल देते।
लेवल क्रॉसिंग पर घंटी, बैरियर नीचे आता,
सुरक्षा का पहरा हर कदम पर साथ निभाता।

टिकट काउंटर से शुरू, PNR की कहानी बनती,
रिजर्वेशन, RAC, वेटिंग—सबकी अपनी निशानी।
लोको पायलट हाथ में थामे नियंत्रण का पहिया,
गार्ड वैन से सिग्नल देकर पूरी ट्रेन को देखता है सदा।

वंदे भारत हो या मालगाड़ी की लंबी कतार,
भारत की नसों में बहती है ये लोहे की धार।
दिन-रात बिना थके लाखों को जोड़ती है राह,
रेलवे की कार्यप्रणाली—जीवन का अनमोल सिलसिला है यही।

रेल चलती है तो देश चलता है,
हर चक्का घूमे तो प्रगति की बात बनती है।

श्री राम शंकर गुप्ता
वरिष्ठ अनुभाग अभियंता, जालना

वादा

सूरज ने कभी नहीं किया वादा
सुबह से मिलने का, जबकि
वो हर रोज मिला।
नदियों ने कभी नहीं कहा सागर से
जबकि वे मिलीं,

पेड़ों ने कभी नहीं किया वादा हमसे
जबकि उन्होंने फल दिया।
जहाँ आश्वस्ति होती है
वहाँ वादा नहीं होता,
वादा स्वयं से किया गया छलावा है ॥

दिल जीत मीणा

आरपीएफ हेड कांस्टेबल/नांदेड़

वर्तमान पीढ़ी का युवा

हे युवा, तू किधर जा रहा?

अपना लक्ष्य तू भटक रहा,
नींव से अपनी तू कट रहा.
बनना है तुझे पटेल, गाँधी—
तू है कि मोबाइल में डूब रहा.

कर्तव्य-पथ से अपने तू भाग रहा,
परिवार-रिश्तेदारों को छोड़ रहा.
बनना है तुझे श्रवण कुमार,
तू है कि धन के पीछे भाग रहा.

शिक्षा से तू दूर भाग रहा,
सिनेमा-क्लबों के चक्कर काट रहा.
बनना है तुझे अब्दुल कलाम,
तू है कि नशे में उलझ रहा.

युवाओं से यही है कहना—
संस्कारों को तुम न छोड़ना.
माता-पिता और बड़ों का
तुम हमेशा सम्मान ही करना.
हमारे देश की संस्कृति की पताका
पूरे विश्व में लहराना.

श्री नितीष कुमार

पदनाम - पुल सहायक

कार्यालय - सहायक मंडल अभियंता (पुल)/नांदेड़

मेरा दोस्त पीपल

गर्मी की तपती दोपहर थी. सूरज मानो आग बरसा रहा था. कई वर्षों बाद मैं प्रदेश से अपने गाँव लौटा था. मन में अजीब-सी खुशी और उत्सुकता थी. बरामदे में खड़ी अपनी पुरानी साइकिल निकाली और यँ ही गाँव की गलियों में निकल पड़ा.

थोड़ी ही दूर चला था कि सामने वही पुराना पीपल का पेड़ दिखाई दिया. उसे देखते ही मेरे कदम अपने-आप रुक गए. कुछ क्षण के लिए सब कुछ थम-सा गया. ऐसा लगा जैसे समय ने पीछे मुड़कर मुझे मेरे बचपन के दिनों में पहुँचा दिया हो.

यही तो वह जगह थी, जहाँ हम स्कूल से लौटते ही अपना बस्ता फेंककर आ जाया करते थे. गर्मियों की दोपहरें इसी पेड़ की ठंडी छाँव में कटती थीं. कोई बत्तीसी खेलता, कोई लूडो बिछा देता. कभी-कभी हम मिट्टी में ही अपने खेल रच लेते और हँसी-मज़ाक में समय का पता ही नहीं चलता था.

गाँव के बुजुर्ग भी अक्सर वहीं आ बैठते थे. उनकी बातों में एक अलग ही मिठास होती थी. कभी वे पुराने ज़माने की कहानियाँ सुनाते, तो कभी रामायण और महाभारत के प्रसंगों से हमें सीख देते. उनकी आवाज़ में अनुभव था और हमारी आँखों में जिज्ञासा. सच कहूँ तो वही हमारी असली पाठशाला थी.

आज सब बदल गया है. वे बुजुर्ग अब इस दुनिया में नहीं रहे. हमारे साथ खेलने वाले दोस्त भी बड़े हो गए—कोई नौकरी में है, तो कोई रोज़गार की तलाश में शहरों की भीड़ में खो गया. अब उस छाँव के नीचे न बच्चों की किलकारियाँ सुनाई देती हैं, न कहानियों की महफ़िल सजती है. आज की पीढ़ी मोबाइल, कंप्यूटर और तकनीक की दुनिया में व्यस्त है.

पर एक चीज़ अब भी वैसी ही है—वह पीपल का पेड़.

वह आज भी उसी स्थान पर पहरेंदार की तरह खड़ा है—शांत, स्थिर और मज़बूत. उसने पीढ़ियों को बदलते देखा है, मौसमों को गुजरते देखा है, पर स्वयं अडिग खड़ा है.

वह हमसे कुछ नहीं माँगता, फिर भी हमें जीवन की सबसे अनमोल सौगात देता है—ऑक्सीजन. दिन हो या रात, वह निस्वार्थ भाव से हमें जीवन देता रहता है.

कभी-कभी सोचता हूँ—क्या हम भी अपने गाँव, अपने रिश्तों और अपनी प्रकृति के प्रति इतने ही निस्वार्थ रह पाएँगे?

उस दिन मैं कुछ देर उसी पेड़ के नीचे खड़ा रहा. हवा हल्की-सी चली, पत्ते सरसराए—जैसे मेरा पुराना दोस्त पीपल मुझसे कह रहा हो,

“मैं यहीं हूँ, तुम कभी भी लौट आना.”

सीख – हमें प्रकृति और अपने रिश्तों के प्रति सदैव निस्वार्थ और कृतज्ञ रहना चाहिए.

श्री संतोष कुमार

पदनाम - सहायक कार्य

सिनियर सेक्शन इंजीनियर/इंजी/का/नांदेड़

क्योंकि मैं रेलवे वाला हूँ!

बड़ी मेहनत के बाद मैंने रेलवे की नौकरी पाई है.

रेलवे में आया तो जाना, यहाँ एक तरफ कुआँ तो दूसरी तरफ खाई है.

जहाँ कदम-कदम पर जिल्लत और घड़ी-घड़ी पर ताने हैं,

यहीं मुझे अपनी ज़िंदगी के कई साल बिताने हैं.

अपनी गलती न हो, लेकिन क्षमा-याचना हेतु हाथ फैलाने हैं,

फिर भी बात-बात पर चार्जशीट और पनिशमेंट ही पाने हैं.

जानता हूँ यह 'अग्निपथ' है, फिर भी मैं चलने वाला हूँ,

क्योंकि मैं रेलवे वाला हूँ.

जहाँ एक तरफ मुझे प्रशासन की और दूसरी तरफ पब्लिक की भी सुननी है,

यानी मुझे दो में से एक नहीं, बल्कि दोनों राह चुननी है.

इयूटी अगर लेट हुई तो अधिकारी चिल्लाते हैं,

गलती चाहे किसी की भी हो, सज़ा तो हम ही पाते हैं.

दो नावों पर सवार हूँ, फिर भी सफर पूरा करने वाला हूँ,

क्योंकि मैं रेलवे वाला हूँ.

आसान नहीं है सबको एक साथ खुश रख पाना,

परिवार के साथ वक्त बिताना और रेलवे में नौकरी बचाना.

परिवार के साथ मुश्किल से कुछ वक्त ही बिता पाता हूँ,

घर जैसे कोई मुसाफिरखाना हो—वहाँ तो बस आता और जाता हूँ.

फिर भी हर मोड़ पर मैं अपनी ज़िम्मेदारी पूरी करने वाला हूँ,

क्योंकि मैं रेलवे वाला हूँ.

सातवें वेतन आयोग की बात पर हमें सालों लटकाया जाता है,

हक़ की बात करने पर डंडा दिखाया जाता है.

ये एक लड़ाई है, इसमें सबको साथ लेकर चलने वाला हूँ,

क्योंकि मैं रेलवे वाला हूँ.

देश के कोने-कोने से आए लोगों ने, जहाँ रेलवे को ही अपना सब कुछ समझ लिया,

छुट्टी मिली न घर जा सके—नौकरी में ही ईद, दिवाली, क्रिसमस मना लिया.

टिफ़िन से टिफ़िन जब मिलते हैं तो एक नया ही जायका बन जाता है,

खुद के बनाए खाने में और घर के खाने में फर्क साफ नज़र आता है.

श्री विजेन्द्र कुमार चंदेले

सहायक संकेत / सि व दूर / अकोला

नौकरी

तू कितनी हशीन होगी ए नौकरी,
सारे युवा आज तुझपे ही मरते हैं

सुख चैन खोकर चटाई पर सोकर,
सारी रात जागकर बस पन्ने पलटते हैं।
दिन की तहरी रात को मैगी ,
आधे पेट खाकर बस तेरा नाम जपते हैं ॥

सारे युवा आज तुझपे ही मरते हैं

अनजान शहर में छोटा सस्ता रूम लेके,
किचन व बेडरूम उसी में सहेजकर।
चाहत में तेरी अपने माँ बाप और,
दोस्तों से दूर रहते हैं॥

सारे युवा आज तुझपे ही मरते हैं

राशन की गठरी सिर पर उठाये,
अपनी मायूसी ओर मजबूरियां खूद ही छुपाये।
खचा-खचा भरे ट्रेन में बिना टिकट,
रिक्स लेकर सफर करते हैं ॥

सारे युवा आज तुझपे ही मरते हैं

इंटरनेट अखबार में हर दिन तुझको तलाशते,
तेरे लिए पत्र-पत्रिकाएं पढ़ते - पढ़ते।
तीस साल के जवान कुवारे फिरते हैं,
तू बड़ी हशीन होगी ए नौकरी ॥

सारे युवा आज तुझपे ही मरते हैं

श्री मुकेश साव
कनिष्ठ अनुवादक/नांदेड़

काश उस दिन

ये उन दिनों की बात है जब मेरी पोस्टिंग नांदेड मंडल के सारवाडी स्टेशन पर प्वाइंट्समैन के पद पर था, जो कि जालना स्टेशन से पहले एक छोटा सा स्टेशन है. चूंकि वहाँ से दो चार लोग ही यात्रा करते हैं इसलिए टिकट काटने का कार्य स्टेशन मास्टर स्वयं ही करते हैं. परंतु कभी कभी गाड़ियों के संचालन में व्यस्त रहने पर टिकट संबंधी कार्य प्वाइंट्समैन को ही संभालना पड़ता है, क्योंकि हम दोनों के अलावा वहाँ पर कोई अन्य कर्मचारी भी नहीं होता है.

रोज की तरह मैं नहा-धोकर ताजे प्रसन्न मुद्रा में स्टेशन तो गया लेकिन अगले कई दिन उदास रहा. वो घटना मेरे मन को कचोटती रही कि - 'काश उस दिन.....'

मैं ड्यूटी पर था काचिगुडा (हैदराबाद) जाने वाली पैसंजर गाड़ी आने वाली थी. उससे जाने के लिए एक दादाजी आए जिनकी उम्र ७० वर्ष के आस-पास रही होगी. छोटा कद, सांवला रंग, बीती उम्र की चेहरे पर झुर्रियां, फटे होठ, सर पर सफेद टोपी, सफेद मैली धोती तथा सफेद पुरानी कमीज पहने, पिचके गाल की सिकुड़ी हुई त्वचा तथा दुबले पतले पैरों की पसलियां तो ऐसे लग रही थीं जो पोषक तत्वों के अभाव में केवल शरीर से जुड़ी हों. उनके पैरों में पड़ी उजली उजली पतली खांचे जो पगडंडियों से आने के क्रम में कटिली झाड़ियों से लगकर पड़ी थी यह बताने के लिए पर्याप्त थी कि दादाजी के पैरों को तेल भी नसीब हुये वर्षों बीत गये थे. उम्र अधिक होने के कारण आँखों की चमक भी फिकी पड़ गई थी. यात्रा करने की चाह, गंतव्य तक पहुँचने की उत्कंठा और अपनों से मिलने की व्याकुलता स्पष्ट झलक रही थी. उम्र के उस पड़ाव पर दादाजी ने मासूमियत भरे चेहरे से काँपते स्वर में बोले -

“साहेब सेलु का टिकट दे दीजिए”.

और हाथ से २० रुपये का नोट पकड़ाने लगे. बीस रुपये का वह नोट उनकी स्थितियों को बताने के लिए पर्याप्त था कि दादाजी ने उसे कितने दिन से बचाकर रखा था. नोट का वह मरोड़ तथा उसका थोड़ा-थोड़ा मलीन होना और दादाजी के हथेली का सम्पूर्ण दृश्य जब भी आँखों के सामने आता है मन भाव विभोर हो जाता है कि -‘काश उस दिन.....’

मैंने टिकट काटने के लिए जैसे ही इनपुट दिया कम्प्यूटर महोदय ने स्क्रीन पर ३० रुपया फरमाया, फिर मैंने दादाजी से कहा - “दहा रुपये और लगेंगे”.

ये बातें सुनते ही दादाजी के चेहरे का रंग और उड़ गया उनका चेहरा मानों कुछ कह रहा था जिसे मैं सुनने समझने में असमर्थ था. दादाजी सोचने लगे कि ये बीस रुपये भी बड़ी जतन से रखे थे और फिर दहा रुपये कहाँ से लाऊँ? उनकी विवशतापूर्ण चेहरे से यह स्पष्ट हो रहा था कि उनके पास दस रुपये नहीं थे.

स्टेशन पर एक दिन मैं जितने भी टिकट कटते हैं उसके पैसे व टिकट ऑडिट होते हैं. कई बार भीड़-भाड़ में पैसे लेन-देन में भूल-चूक हो जाते हैं पर वे पैसे खुद के जेब से भरने पड़ते हैं. जेब से भरने का कार्य कई बार मैं भी कर चुका था. वर्तमान परिवेश में नये जमाने के वे बहुत सारे लोग खासकर युवा वर्ग जिनको कम दूरी के लिए जाना होता है, वे टिकट लेते ही नहीं हैं, लेकिन दादाजी का रेलवे के प्रति समर्पण तथा निष्ठा देखकर मैं मुग्ध हो गया. जो स्पष्ट हो रही थी कि बिना टिकट यात्रा नहीं करना है. ये सब नैतिकता धीरे-धीरे विलुप्त हो रही है. पूर्वजों के समय में कागजाती काम कम होते थे, क्योंकि उनके जुबान का महत्व होता था. एक बार जो कहा सो पूरा करते थे, लेकिन आज के इस नई पीढ़ी को इन सभी चीजों का एहसास कहाँ रहा?

दस रुपये और सुनकर दादाजी काउंटर से कहीं और चले गये, शायद पैसे के अभाव में यात्रा न करने का फैसला किया. इस परिस्थिति में मुझे कुछ न सूझा की क्या करूँ, कैसे करूँ? जब सूझा तब तक देर हो चुकी थी और उसके कुछ ही देर बाद मुझे एहसास हुआ कि मैं दादाजी की मदद कर सकता था. मैं दौड़ते हुए बाहर की तरफ गया, चारो ओर नजरें घुमाई परंतु दादाजी दूर-दूर तक दिखाई नहीं दिये. एक तरफ जहाँ दादाजी के ईमानदारी और अभिमान देखकर मैं प्रफुल्लित हो रहा था, वहीं दूसरी तरफ आत्मग्लानि से मरे जा रहा था कि काश दादाजी की मदद कर पाया होता.

नौकरी पेशे में स्थानांतरण होते रहते हैं, भांति - भांति के लोग मिलते-बिछड़ते रहते हैं. ये सब मानव जीवन का हिस्सा है जो चलता रहेगा फिर भी कुछ घटनाएँ ऐसी घटित हो जाती हैं, जो दीर्घ काल तक दिमाग पर अमिट छाप छोड़ जाती हैं, जिसे जीवन पर्यन्त भूलाया नहीं जा सकता है. मन जब भी शांत होता है मिजाज भावुक हो जाता है, कलेजा बैठने लगता है और अफसोस होने के साथ - साथ आज कहता हूँ कि -‘काश! उस दिन.....’

श्री शशि भूषण कुमार यादव
प्वाइंट्समैन, ऑपरेटिंग/नांदेड़

सुविचार

हार कर बैठ जाना नहीं,
फिर से उठना सीखो।

जीवन की हर चुनौती में,
मुस्कुराकर जीना सीखो॥

सुविचार

मेहनत की राह पर जो चल पड़ता है,
वही जीवन में आगे बढ़ता है।

सपनों को सच करना है अगर,
तो हर दिन खुद से लड़ना पड़ता है॥

नारी शिक्षा की मशाल: सावित्रीबाई फुले

ज्ञान का दीप जलाने निकलीं,
वह एक नारी शक्ति थीं।
सदियों पुरानी जंजीरें तोड़ीं,
अटूट जज्बे की कहानी थीं।।

पत्थर खाए, कीचड़ झेला,
पर कभी न वह घबराईं।
भारत की महिला शिक्षिका बन,
अंधियारे में ज्योत जगाईं।।

जब बंद थे द्वार शिक्षा के,
नारी और पिछड़ों के लिए।
तब सावित्री ने तोड़ीं जंजीरें,
दस्तक दी शिक्षा के लिए।।

भिड़े-वाडा की उन गलियों में,
इतिहास नया एक रचा गया।
पहली पाठशाला के आँगन में,
शिक्षा का अंकुर खिला।।

बाल विवाह की बेड़ियों पर,
जमकर उन्होंने प्रहार किया।
जब शिक्षा की राह दिखाई,
तब बच्चियों को सम्मान मिला।।

उत्पीड़ित स्त्रियों के आँसू पोंछे,
गरिमामयी जीवन प्रदान किया।
स्त्री-अधिकारों की अलख जगाई,
विधवा-पुनर्विवाह का पैगाम दिया।।

निज घर के द्वार खोलकर,
दलितों को जल प्रदान किया।
सत्यशोधक समाज की राह पर,
जग को समता का ज्ञान दिया।।

मूर्खता और अंधविश्वास को,
कलम से अपनी मात दी।
'काव्यफुले' की रचना कर,
चेतना की नई सौगात दी॥

आज करोड़ों बेटियाँ जो,
आसमाँ छूने निकली हैं।
सावित्री के त्याग के कारण,
वे गगन में दमक रही हैं॥

नमन है ऐसी माता को,
जो आधुनिक युग की दाता हैं।
सावित्री की हर बेटी का,
उज्ज्वल कल जगमगाता हैं॥

श्री योगेश भस्मे दीपराज
वरिष्ठ अनुवादक/नांदेड़

अभिमन्यु

घायल अभिमन्यु ने पूछा—
हे द्रोण गुरु, हे परशु-शिष्य!
अधर्म के पाले में रहकर
अनीति में क्यों मशगूल गए?
याद हैं बने जो नियम युद्ध के,
या तुम भी सब भूल गए?

एक निहत्थे पर सब मिलकर
तलवारों से प्रहार करें,
वीर नहीं, वे कायर होते
जो खुद की जय-जयकार करें।

ब्रह्मांड में द्रोण गुरु, वीर बड़े कहलाते हो,
फिर कायरता देख-देख तुम कैसे चुप रह जाते हो?

में वासुदेव कृष्ण का शिष्य,
कायर न कहलाऊँगा।
इन कायरों के समक्ष
लड़ते-लड़ते मर जाऊँगा।

लेकिन तुम पिताश्री से
कैसे नज़र मिलाओगे?

आने वाले कल में
तुम भी कायर ही कहलाओगे।
आँखों में आँसू लिए खड़े
द्रोण कुछ भी कह न पाते हैं,
नियति के आगे बड़े-बड़े योद्धा भी मौन हो जाते हैं।

श्री दीपक अधाना
रेलपथ अनुरक्षक / लासूर

रेलवे कर्मियों के लिए प्रस्तुत जागरूक स्वास्थ्य कविता

स्वास्थ्य : कर्मपथ का संरक्षक

स्वास्थ्य रहे तो कर्म सधे, सेवा में आती धार ,
स्वस्थ तन-मन से ही बने, रेल सेवा सशक्त, अपार ॥

ड्यूटी की लंबी राहों में, दिन-रात का अनुशासन,
स्वस्थ काया ही देती है, कर्तव्य को दृढ़ आसन॥

स्वास्थ्य से बड़ा धन नहीं, यह जीवन का आधार.
इसके बिना पद, प्रतिष्ठा, सब हैं क्षणिक आडंबर भार॥

धन की दौड़ में जिसने छोड़ा, अपनी साँसों का मान,
फिर उसी स्वास्थ्य को पाने में, खोया धन और सम्मान॥

धन-बल से वह लौट न पाए, जो आदत से बिसरा जाए,
इसलिए जीवन-शैली को, समय रहते सुधारा जाए॥

शुद्ध जल पियो, सादा आहार, नियमित श्रम, विश्राम.
योग, संयम, स्वच्छ विचार, यही स्वास्थ्य का धाम॥

नशा, आलस्य, अव्यवस्था, रोगों के सब द्वार,
इनसे दूरी ही रचती है, स्वस्थ जीवन का संसार॥

श्री सुनील कुमार मीणा
मुख्य स्वास्थ्य निरीक्षक
छत्रपति संभाजीनगर, रेलवे स्टेशन / नांदेड़ मंडल

राजभाषा संबंधी प्रश्न

1. राजभाषा से संबंधित संवैधानिक प्रावधान भारत के संविधान के किस भाग में है ?
(A) भाग-15 (B) भाग-16
(C) भाग-17 (D) भाग-18
2. हिंदी भाषा के विकास के लिए निर्देश का उल्लेख संविधान के किस अनुच्छेद में है?
(A) अनुच्छेद - 343 (B) अनुच्छेद -344
(C) अनुच्छेद -351 (D) इनमें से कोई नहीं
3. संसदीय राजभाषा समिति की कौन-सी उप समिति रेल कार्यालयों का निरीक्षण करती है?
(A) दूसरी उप समिति (B) तीसरी उप समिति
(C) पहली उप समिति (D) इनमें से कोई नहीं
4. संसदीय राजभाषा समिति में राज्य सभा के कितने सदस्य होते हैं?
(A) 5 (B) 10 (C) 15 (D) 22
5. राजभाषा नियम 1976 के अनुसार राजभाषा कार्यान्वयन की दृष्टि से भारत को कितने क्षेत्रों में वर्गीकृत किया गया है?
(A) 2 (B) 3 (C) 4 (D) 5
6. भारतीय संविधान की 8वीं अनुसूची में निम्नलिखित में से कौन सी भाषा शामिल नहीं है?
(A) नेपाली (B) उर्दू (C) अंग्रेजी (D) सिंधी
7. संविधान की 8वीं अनुसूची में अब तक कितनी भाषाओं को मान्यता दी जा चुकी है?
(A) 15 (B) 18 (C) 22 (D) 24
8. राजभाषा नियम 1976 में कुल कितने उप नियम हैं?
(A) 9 (B) 10 (C) 12 (D) 14
9. राजभाषा अधिनियम 1963 में कुल कितनी धाराएं हैं?
(A) 9 (B) 10 (C) 11 (D) 12
10. मुख्य राजभाषा अधिकारी का कार्यकाल कितने वर्ष का होता है.
(A) 01 वर्ष (B) 02 वर्ष (C) 03 वर्ष (D) 04 वर्ष

उत्तर: 1-C, 2-C, 3-A, 4-B, 5-B, 6-C, 7-C, 8-C, 9-A, 10-A.

****धन्यवाद****

